टिप्पणी

3

13वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

12वीं शती ईस्वी (AD) में भारत के विभिन्न भागों में शक्तिशाली वंशों के पतन के बाद कला के संरक्षकों का अभाव हो गया तथा इस युग में बड़े स्तर पर कला की परियोजनाएं प्रारम्भ नहीं हुईं। तथापि राजस्थान, बंगाल तथा उड़ीसा में कुछ मन्दिरों का निर्माण हुआ, जो नगण्य था। इस युग में मुस्लिम शासकों ने निर्माण कार्य को किलों तथा मकबरों तक सीमित रखा। उन्होंने वास्तुकला को प्रोत्साहन नहीं दिया। परन्तु इस काल में सचित्र हस्तलिपियां/पांडुलिपियाँ काफ़ी संख्या में तैयार हुईं जिससे भारतीय कला सम द्ध हुई। ये पाण्डुलिपियाँ विभिन्न भारतीय धर्म तथा सम्प्रदायों से सम्बन्धित थीं। इन धर्मों एवं सम्प्रदायों में मुख्यरूप से हिन्दू, जैन तथा बौद्ध धर्म शामिल हैं। इन सचित्र पाण्डुलिपियों का मुख्य केन्द्र बंगाल, गुजरात तथा बिहार था। बंगाल तथा बिहार में ये पाण्डुलिपियाँ **पाल वंश** के शासकों के संरक्षण में तैयार हुईं जिसमें **पाल शैली** स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। दूसरी ओर, जैन धार्मिक पाण्डुलिपियाँ बिहार में लिखी एवं चित्रों द्वारा सजाई गईं। ये पाण्डुलिपियाँ पाम पत्रों पर लिखी गईं जिसमें सुन्दर लेख के बीच में चित्रों के लिए स्थान छोड़ा गया था।

भारत के कुछ भागों में मन्दिर वास्तुकला को भी इसी काल में बढ़ावा दिया गया। **माउन्ट आबू** के दिलवाड़ा में संगमरमर के मन्दिर समूह तथा बंगाल एवं उड़ीसा में पक्की मिट्टी (टेरीकोटा) के बने मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।

16वीं शती ईस्वी से 19वीं शती ईस्वी तक **राजपूत** तथा **मुगल चित्रकारी** काफ़ी फली, फूली और सम द्ध हुई। राजपूत चित्रकला में लोक–चित्रकला तथा अजन्ता चित्रकला शामिल थी जबकि मुगल चित्रकला में फारसी तथा राजपूत चित्रकला का सम्मिश्रण था। 18वीं शताब्दी के बाद भारतीय कला का पतन प्रारम्भ हो गया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- 12वीं शती ईस्वी से 18 वीं शती ईस्वी तक भारत में कला की स्थिति का वर्णन कर सकेंगे;

शृंगार

टिप्पणी

- भारतीय कला के पतन के कारणों को लिख सकेंगे;
- इस काल में हस्तलिखित पाण्डुलिपि के चित्रों को समझ सकेंगे;
- राजपूत शैली की महत्वपूर्ण कलाकृतियों का वर्णन कर सकेंगे; और
- पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के मन्दिरों के बारे में लिख सकेंगे।

3.1 श्रंगार

शीर्षक	:	श्रंगार
शैली	:	गुलेर घराना
समय	:	18वीं शताब्दी ईस्वी
कलाकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	टेंपेरा

सामान्य विवरण

कांगड़ा घाटी के निकट **गुलेर** नामक छोटा–सा राज्य था। यह राज्य **पहाड़ी शैली** के चित्रों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। 1450 ईस्वी से 1780 ईस्वी के दौरान यह शैली विभिन्न राजाओं के संरक्षण में काफ़ी पल्लवित और सम द्ध हुई। **गुलेर लघु चित्रकला** विकास के विभिन्न चरणों को पार करती हुई पल्लवित हुई है। इस पर लोक–कला तथा मुग़लों की लघुचित्र शैली का प्रभाव पड़ा। 18वीं शताब्दी ईस्वी में गुलेर चित्रकला अपनी परिपक्व अवस्था तक पहुंच चुकी थी। कुछ विद्वानों के मतानुसार पहाड़ी शैली का मूल गुलेर में था जिसने कई अन्य पहाड़ी शैली, जैसे कांगड़ा, को प्रभावित किया। गुलेर चित्रों की प्रामाणिक विशेषता पौराणिक कृष्ण तथा राधा की प्रेम कथा है। यह प्रेम कथा आज तक दिव्य प्रेम के जीवंत प्रतीक के रूप में मानी जाती है। गुलेर चित्रकला में **रामायण** तथा **महाभारत** की कहानियों को दर्शाया गया है। इन कहानियों को शाही चित्रों तथा राज–सभा के द श्यों से सजाया गया है। **'श्रंगार'** विशिष्ट राजपूत चित्रकला का उदाहरण है।

एक दुल्हन को विवाह के लिए सजाया जा रहा है। ये आकृतियाँ वास्तुकला की चौखट में समन्वय और संतुलन के साथ बनाई गई हैं। इस चित्र के अग्रभाग में एक नौकरानी चन्दन का लेप तैयार कर रही है। दूसरी नौकरानी दुल्हन के पैर में पायल पहना रही है। इसी चित्र में दो और आकृतियाँ खड़ी दिखाई गई हैं जिनमें से एक आईना (शीशा) लेकर खड़ी है तथा दूसरी फूलों की माला बना रही है। एक महिला (स्त्री) किसी सहायिका के सहयोग से दुल्हन के बाल संवार रही है तथा एक बुजुर्ग महिला इस सारे क्रियाकलाप का निरीक्षण कर रही है।

कलाकार (चित्रकार) ने दुल्हन के लजाने तथा लालित्वपूर्ण भंगिमा का दर्शनीय चित्रण किया है। उसकी भावभंगिमा का प्रदर्शन ही कलाकार (चित्रकार) की कला का चर्मोत्कर्षीय प्रदर्शन है। संवेदनशील चेहरे, सौम्य व्यवहार तथा रंगों का कोमल मिश्रण गुलेर शैली की विशेषताएं हैं।

जैन लघुचित्र

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.1

1. पहाड़ी चित्रों के मूल स्थानों के नाम बताइए।
2. गुलेर चित्रकला की सर्वप्रमुख क्या विशेषता है?
3. श ंगार चित्र के पूर्वभाग में दो आकृतियाँ क्या कर रही हैं?
4. गुलेर शैली की किसी एक विशेषता को लिखिए।

3.2 जैन लघुचित्र

शीर्षक	:	कल्पसूत्र
कलाकार	:	अज्ञात
शैली	:	जैन पाण्डुलिपि चित्र
समय	:	15वीं शती ईस्वी
माध्यम	:	पाम की पत्तियों पर टेंपेरा

सामान्य विवरण

पूरे भारत में 7वीं शती ईस्वी से प्रारम्भ होकर 10वीं तथा 15वीं शती (AD) तक जैन लघु–चित्रों का विकास हुआ। जैन धर्मग्रन्थ जैसे कि **'कालकाचार्य कथा'** तथा **'कल्पसूत्र'** को **पार्श्वनाथ**, **नेमिनाथ, ऋषभनाथ** तथा अन्य तीर्थंकर के चित्रों से सजाया गया है।

अधिकांशतः जैन लघुचित्र 10 वीं शताब्दी (AD) में बने। इन चित्रों के मुख्य केन्द्र पंजाब, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात तथा राजस्थान में थे।

ये पाण्डुलिपियाँ प्रमुख रूप से पामपत्रों पर लिखी गई हैं। इसीलिए चित्र भी उन्हीं पाण्डुलिपियों के साथ ही बनाए गए हैं। चित्रों में प्रयुक्त रंग आस–पास में उपलब्ध रंगों से बनाए जाते थे। लाल तथा पीले रंगों का प्रयोग विशेष रूप से किया गया है। इन रंगों के साथ–साथ स्वर्णिम तथा रजत रंगों का प्रयोग भी किया गया है। इन चित्रों में मानवी आकृतियाँ कुछ विशिष्टताओं को दर्शाती हैं। इन व्यक्तियों के चेहरे रूपरेखा के रूप में हैं जिसमें उनकी आँखों का सामने का द श्य दिखाई देता है। इसी कारण उनकी एक आंख चेहरे की रूपरेखा से दूर बाहर की ओर दिखाई देती है। आकृति के मुख्य भाग भी अग्रभाग की ओर ही होते थे। स्त्री आकृतियों ने बहुत गहने जवाहरात पहन रखे हैं। इन चित्रों में रेखाओं को विशेष महत्व दिया गया है।

कल्पसूत्र, जैन धर्म की विधियों की पुस्तक में एक चित्र है। इस चित्र का समस्त स्थान कुछ आयतों तथा चौकोरों में बांट दिया गया है। पुरूषों, स्त्रियों तथा पशुओं का चित्रण लाल रंग की प ष्ठभूमि में किया गया है। पीले रंग से प्रत्येक खण्ड को दिखलाया गया है। प्रत्येक खण्ड में कल्पसूत्र की कहानी का अलग–अलग कथाक्रम वर्णित है। स्वर्ण तथा सामुद्रिक रंग के कीमती पत्थरों का प्रयोग किया गया है। यह शैली पूरी तरह लोक शैली पर केंद्रित है, जहाँ आकार में चपटापन है तथा अभिव्यक्ति रूढ़िवादी है, जिसमें

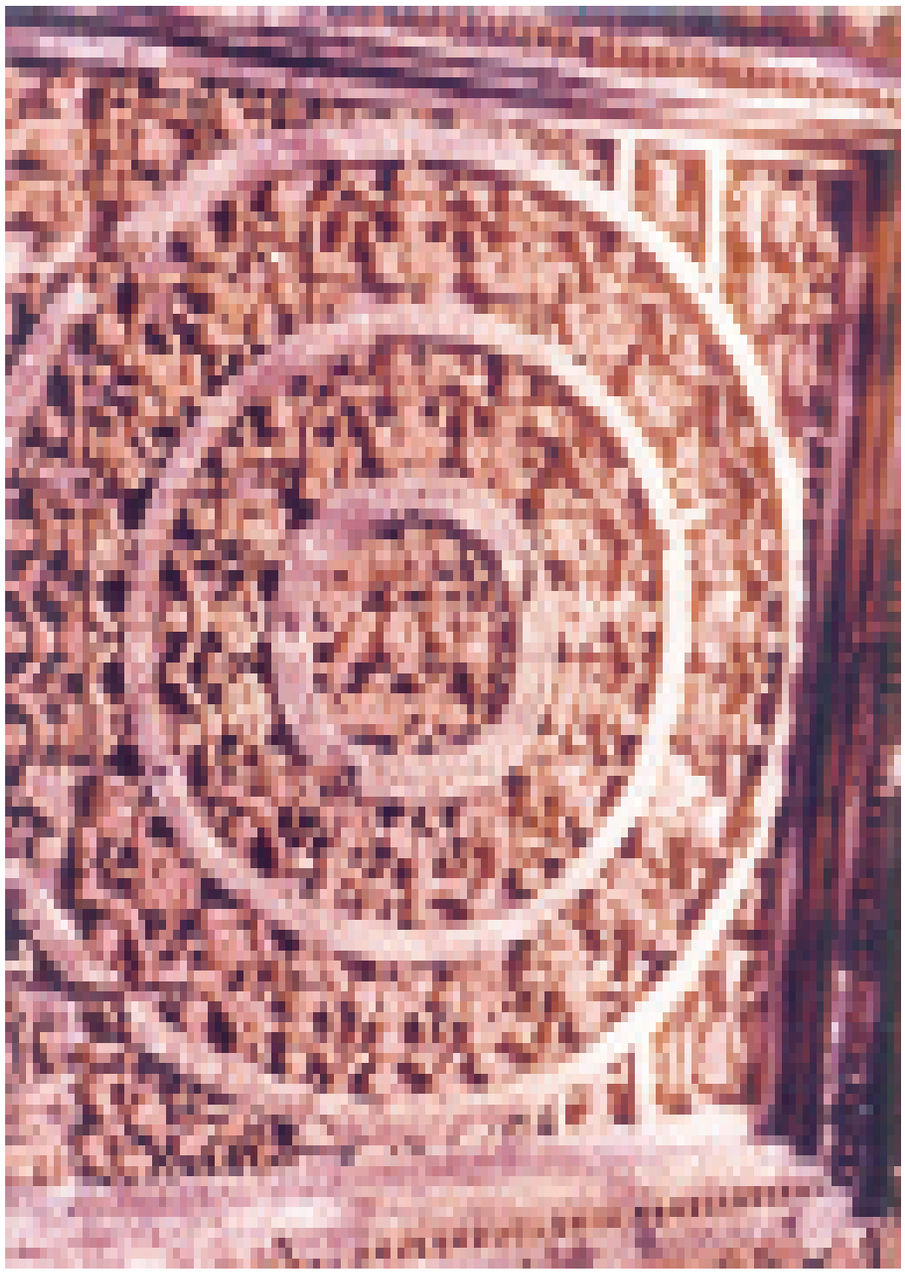

रासलीला

परिद श्य का अभाव है। इसके बावजूद कलाकार की वास्तुकला के प्रतिमानों तथा कपड़ों की अभिकल्पना का आकलन विशेष रूप से दिलचस्प है।

प्रभावकारी रेखाएं तथा शरीर की रेखाओं का बिन्दुओं से प्रयोग इन चित्रों के सौंदर्य को बढ़ाता है।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. जैन लघुचित्रों का विकास कब हुआ?
2. जैन लघुचित्रों में कौन–से चित्र चित्रित किए गए?
3. जैन लघुचित्रों में सबसे अधिक किन प्रमुख रंगों का प्रयोग किया गया है?
4. इन चित्रों में मानवी आकृतियों के क्या विशिष्ट गुण हैं?

3.3 रासलीला

शीर्षक	:	विष्णुपुर टेराकोटा
कलाकार	:	अज्ञात
उपलब्धि का स्थान	:	पश्चिम बंगाल के विष्णुपुर में पंचमुरा मन्दिर।
समय	:	17वीं शती AD के आसपास
माध्यम	:	पक्की मिट्टी (टेराकोटा) की टाइल्स

पश्चिमी बंगाल में **विष्णुपुर** नामक एक छोटा–सा शहर (कस्बा) है। किसी समय में यह **बांकुरा जिले** के शासकों की राजधानी थी। यहाँ छोटे–छोटे कई मन्दिर हैं जिनको पक्की मिट्टी (टेराकोटा) की टाइल्स से सजाया गया है। यह (टेराकोटा) कला 18वीं तथा 19वी शती ईस्वी की विभिन्न संस्कृतियों तथा धार्मिक घरानों को प्रतिबिम्बित करती है। अधिकांश मंदिर या तो शिवजी को या विष्णुजी को समर्पित हैं। इन पक्की मिट्टी की टाइल्स पर उभरी हुई विषय–वस्तु विभिन्न धार्मिक प्रथाओं को प्रतिबिंबित करती है। शिव, दुर्गा तथा राधाकृष्ण की आकृतियाँ रामायण तथा महाभारत के पात्रों के साथ दिखाई देती हैं।

कलाकार ने समकालीन सामाजिक जीवन को दर्शाने का पूर्ण प्रयास किया है। मानव, पशु तथा चिड़ियों के जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों को चित्रित किया गया है।

मन्दिर वास्तुकला बंगाल की झोंपड़ी प्रकार की एक मंजिली या दो मंजिली डिजाइन पर आधारित है। दीवारों को पक्की मिट्टी की छोटी टाइल्स से सजाया गया है। ये टाइल्स दीवारों पर मिट्टी गारे से चिपका दिए गए हैं। ये चूने की टाइल्स ईंटों जैसे खांचों से बनाई

टिप्पणी

जाती हैं। इनको आग में तपाकर पक्की मिट्टी की तरह ही बनाया जाता है।

'रासलीला' में राधा–कृष्ण के दिव्य प्रेम को उनके साथी गोप तथा गोपियों के सान्निध्य में दर्शाया गया है। इस सुन्दर फलक का एक चौकोर स्थान पर तीन गोलों को केन्द्रित कर संयोजन किया गया है। इन तीन गोलों में से बीच के गोले में एक गोपी के साथ राधाकृष्ण की आकृतियां दिखाई गई हैं। शेष दो गोलों में कुछ आकृतियां एक–दूसरे के हाथ पकड़े दिखाई गई हैं। चौकोर के चारों कोनों को मानव, पशुओं तथा चिड़ियों की आकृतियों से सजाया गया है।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. विष्णुपुर कहाँ है?
2. विष्णुपुर के मन्दिर कैसे सजाए गए हैं?
3. पक्की मिट्टी से बने इन मन्दिरों में बनाई गई आकृतियां क्या दिखाती हैं?
4. इस शैली के विकास का क्या समय था? उसका वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

संरक्षकों के अभाव में कला का विकास अवश्य प्रभावित होता है परन्तु इससे कलाकार की स जनात्मकता में कमी नहीं आती। 12वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला की स्थिति यही सिद्ध करती है। इस काल में कला शैली में काफी परिवर्तन हुए। परिणाम स्वरूप इस काल में कलाचित्र का आकार जैन, बौद्ध तथा हिन्दू पाण्डुलिपियों के चित्रों की तरह छोटा हो गया। राजपूत तथा मुगल कलाकृतियाँ भी आकार में छोटी हैं। आकार में छोटे होते हुए भी सौंदर्य एवं तकनीकी द ष्टि से इन चित्रों का स्तर काफी ऊंचा है।

लघु चित्रों के साथ–साथ भारत के पूर्वी भाग में टेराकोटा की बनी उच्चावच कृतियाँ (Relief works) विशेष रूप से पश्चिमी बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुईं। बहुत–से मन्दिर इन टाइल्स से सजाए गए हैं।

पाठांत अभ्यास

1. 12वीं शती (AD) के बाद कला के विकास का विवरण दीजिए।
2. टेराकोटा क्या है? उस मन्दिर का वर्णन करें जिसमें टेराकोटा की टाइल्स लगाई गई हैं।

टिप्पणी

3. भारत में किसी प्रचलित शैली के लघुचित्रों पर संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए।

4. जैन लघुचित्रों की क्या विशेषताएं हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. गुलेर

2. राधा–कृष्ण की प्रेमकथा, रामायण और महाभारत की कहानियां

3. पायल पहनाते हुए तथा चन्दन का पेस्ट बनाते हुए

4. अति संवेदनशील, सौम्य व्यवहार

3.2 1. 7वीं शती (AD), 10वीं शती (AD) तथा 15वीं शती (AD) के दौरान

2. तीर्थंकर जैसे पार्श्वनाथ, नेमिनाथ तथा ऋषभनाथ आदि की प्रतिमाएं (मूर्तियां)

3. लाल, पीला, स्वर्णिम तथा रजत रंग

4. आकृतियों के चेहरे पार्श्व रूप से प्रस्तुत हैं तथा आंखों को आगे से दिखाया गया है, एक आंख चेहरे की रेखाओं से बाहर जाती है।

3.3 1. पश्चिम बंगाल

2. मिट्टी (टेराकोटा) पक्की से सजाई हुई

3. शिव, दुर्गा, राधा–कृष्ण तथा रामायण एवं महाभारत के अन्य पात्र।

4. 17वीं तथा 18वीं शती (AD)